

विषय सूची

विषय	पृष्ठसङ्ख्या
DECLARATION	क
CERTIFICATE	ख
भावहरणको प्रमाणपत्र	ग
कृतज्ञता ज्ञापन	घ-च
शोध सारांश	छ-ट
संक्षिप्त शब्द	ठ
पहिलो अध्याय शोध परिचय	१-१०
१.१ शोध शीर्षक	
१.२ शोध परिचय	
१.३ शोध प्रयोजन	
१.४ समस्या कथन	
१.५ उद्देश्य	
१.६ पूर्वकार्यको सर्वेक्षण	
१.७ सामग्री सङ्कलन विधि र अनुसन्धान पद्धति	
१.७.१ सामग्री सङ्कलन विधि	
१.७.२ अनुसन्धान पद्धति	
१.८ सैद्धान्तिक ढाँचा र प्रस्तुति	
१.९ शोधविधि	
१.१० शोधको आवश्यकता र औचित्य	
१.११ शोधको सीमा अनि क्षेत्र	
१.१२ शोधकार्यको अध्याय विभाजन	
१.१३ भावी शोधार्थीलाई परामर्श	
दोस्रो अध्याय हास्यव्यङ्ग्यको सैद्धान्तिक आधार	११-१५
२.१ संस्कृत साहित्यमा हास्यको स्वरूप र भेद	
२.१.१ संस्कृत साहित्यमा हास्यका भेद	
क. स्मित	
ख. हसित	
ग. उपहसित	

घ. विहसित
ड. अपहसित
च. अतिहसित

- २.२ संस्कृत साहित्यमा व्यङ्ग्यको स्वरूप
- २.२.१ व्यङ्ग्यको प्राचीन स्वरूप
- २.२.२ पाश्चात्य साहित्यमा व्यङ्ग्यको परम्परा
- क. होरेटियन सटायर
- ख. जुविनलियन सटायर
- ग. मेनिप्पेयन सटायर
- २.३ पूर्वीय साहित्यशास्त्रमा हास्यको स्वरूप र परिभाषा
- २.४ पाश्चात्य साहित्यमा हास्यको स्वरूप, परिभाषा तथा भेद
- २.४.१ आकस्मिक वा अप्रत्याशित अवस्थामा जन्मिने हास्य
- २.४.२ अनभिज्ञ आलम्बनजनित हास्य
- २.४.३ योजनाजनित हास्य
- २.४.४ ह्यूमर (स्मित हास्य)
- २.४.५ विट (वाग्वैदग्ध्य)
- २.४.६ सटायर (व्यङ्ग्य)
- २.४.७ आइरोनी (वक्रोक्ति)
- २.४.८ प्यारोडी (परिहास वा विद्रूप)
- २.४.९ फार्स (प्रहसन)
- २.४.१० कार्टून (व्यङ्ग्य चित्र)
- २.४.११ ल्याम्पुन (निन्दा-लेख / आक्षेप रचना)
- क) आत्माभिमानको सिद्धान्त
- ख) अवरोही असङ्गतिहरूको सिद्धान्त
- ग) तनाउ मुक्तिको सिद्धान्त
- घ) स्वतन्त्र क्रियाशीलताको विरुद्ध अनिश्चित क्रियाशीलताको सिद्धान्त
- २.५ हास्यव्यङ्ग्यको पृष्ठभूमि र परम्परा
- २.५.१ प्रारम्भिक वा पहिलो चरण (वि. सं. १९९०भन्दा अघि)
- २.५.२ विकासशील वा दोस्रो चरण (वि.सं. १९९१-२०१६)

- २.५.३ आधुनिक वा तेस्रो चरण (वि.सं. २०१७ देखि हालसम्म)
- २.६ हास्य र व्यङ्ग्यको सम्बन्ध
- २.७ हास्य र व्यङ्ग्यमा अन्तर
- २.८ व्यङ्ग्य निर्धारणका आधार
- २.८.१ समाज विषयक व्यङ्ग्य
- २.८.२ व्यक्ति विषयक व्यङ्ग्य
- २.८.३ धर्म विषयक व्यङ्ग्य
- २.८.४ संस्कृति विषयक व्यङ्ग्य
- २.८.५ भाषा विषयक व्यङ्ग्य
- २.८.६ साहित्य विषयक व्यङ्ग्य
- २.८.७ शिक्षा विषयक व्यङ्ग्य
- २.८.८ वर्ण व्यवस्था विषयक व्यङ्ग्य
- २.८.९ आधुनिक सभ्यताप्रति व्यङ्ग्य
- २.८.१० विज्ञान विषयक व्यङ्ग्य
- २.८.११ राजनीति विषयक व्यङ्ग्य
- २.८.१२ अर्थ विषयक व्यङ्ग्य
- २.८.१३ स्वास्थ्य विषयक व्यङ्ग्य
- २.८.१४ परिवार विषयक व्यङ्ग्य
- २.९ निष्कर्ष

तेस्रो अध्याय सानुभाइ शर्मा : व्यक्तित्व र कृतित्व

९६-१०७

- ३.१ जन्म र शैशवकाल
- ३.२ प्रारम्भिक शिक्षा
- ३.३ उच्च शिक्षा
- ३.४ पारिवारिक जीवन
- ३.५ कार्य क्षेत्र
- ३.६ साहित्यिक व्यक्तित्व
- ३.७ सम्पादन
- ३.८ संघ-संस्थाहरूमा संलग्नता
- ३.९ पुरस्कार तथा सम्मान

- ४.१ परिचय
- ४.१.१ सानुभाइ शर्माको व्यङ्ग्य लेखनको थालनी
- ४.२ शर्माका व्यङ्ग्य रचनाहरूको वर्गीकरण
- ४.२.१ समाज विषयक व्यङ्ग्य
- क) अम्मलीहरूको कुबानीप्रति व्यङ्ग्य
- ख) लटरी खेलको समाजमा नकारात्मक प्रभावप्रति व्यङ्ग्य
- ग) जिम्मेवारी बोध नभएका युवाहरूप्रति व्यङ्ग्य
- घ) दिशाहीन तथा दिग्भ्रमित युवाहरूप्रति व्यङ्ग्य
- ङ) समाजमा व्याप्त अन्धविश्वासप्रति व्यङ्ग्य
- च) समाज सेवाको ढोङ्गप्रति व्यङ्ग्य
- ४.२.२ व्यक्ति विषयक व्यङ्ग्य
- ४.२.३ प्रशासन विषयक व्यङ्ग्य
- ४.२.४ संस्कृति विषयक व्यङ्ग्य
- ४.३ सानुभाइ शर्माका कथामा व्यङ्ग्य चेतनाको विश्लेषणात्मक अध्ययन
- ४.३.१ समाज तथा व्यक्ति विषयक व्यङ्ग्य
- क) अम्मलीहरूको कुबानीप्रति व्यङ्ग्य
- ख) लटरी खेलको समाजमा नकारात्मक प्रभावप्रति व्यङ्ग्य
- ग) जिम्मेवारी बोध नभएका युवाहरूप्रति व्यङ्ग्य
- घ) दिशाहीन तथा दिग्भ्रमित युवाहरूप्रति व्यङ्ग्य
- ङ) समाजमा व्याप्त अन्धविश्वासप्रति व्यङ्ग्य
- च) समाज-सेवाको ढोङ्गप्रति व्यङ्ग्य
- छ) ठग-ठगीहरूप्रति गरिएको व्यङ्ग्य
- ४.३.२ प्रशासन विषयक व्यङ्ग्य
- ४.३.३ संस्कृति विषयक व्यङ्ग्य

- ४.३.४ परिवार विषयक व्यङ्ग्य
- ४.३.५ अर्थ विषयक व्यङ्ग्य
- ४.३.६ शिक्षा विषयक व्यङ्ग्य
- ४.३.७ धर्म विषयक व्यङ्ग्य
- ४.३.८ युद्धको बर्बरता विषयक व्यङ्ग्य
- ४.३.९ समसामयिक प्रेमी-प्रेमिकाप्रति व्यङ्ग्य
- ४.३.१० भाषा तथा साहित्य विषयक व्यङ्ग्य
- ४.३.११ आधुनिक सभ्यताप्रति व्यङ्ग्य
- ४.३.१२ स्वास्थ्यप्रति व्यङ्ग्य
- ४.४ सानुभाइ शर्माका निबन्धमा व्यङ्ग्य चेतनाको विश्लेषणात्मक अध्ययन
 - ४.४.१ सामाजिक तथा वैयक्तिक व्यङ्ग्य
 - क) अम्मलीहरूको कुबानीप्रति व्यङ्ग्य
 - ख) व्यक्तिको चिप्ले स्वभावप्रति व्यङ्ग्य
 - ग) वर्ण भेद विषयक व्यङ्ग्य
 - घ) व्यक्तिको एकोहोरो स्वभावप्रति व्यङ्ग्य
 - ङ) दिशाहीन तथा दिग्भ्रमित युवाहरूप्रति व्यङ्ग्य
 - ४.४.२ संस्कृति विषयक व्यङ्ग्य
 - ४.४.३ अङ्ग्रेजी शिक्षा नीति विषयक व्यङ्ग्य
 - ४.४.४ साहित्य विषयक व्यङ्ग्य
 - ४.४.५ राजनीति विषयक व्यङ्ग्य
 - ४.४.६ धर्म विषयक व्यङ्ग्य
 - ४.४.७ पौराणिक विषयमा आधृत हास्य
 - ४.४.८ कर्तव्यविमुख युवावर्गप्रति व्यङ्ग्य
 - ४.४.९ भाषिक विकृति विषयक व्यङ्ग्य
- ४.५ सानुभाई शर्माका नाटकमा व्यङ्ग्य चेतनाको विश्लेषणात्मक अध्ययन
 - ४.५.१ शर्माका नाटकमा समाज विषयक व्यङ्ग्य
 - क) अम्मलीहरूको कुबानीप्रति व्यङ्ग्य
 - ख) जिम्मेवारी बोध नभएका युवाहरूप्रति व्यङ्ग्य

- ४.५.२ अर्थ विषयक व्यङ्ग्य
- ४.५.३ अन्धविश्वास विषयक व्यङ्ग्य
- ४.५.४ भाषा/साहित्य विषयक व्यङ्ग्य
- ४.५.५ स्वास्थ्य विषयक व्यङ्ग्य
- ४.५.६ आधुनिक सभ्यताप्रति व्यङ्ग्य
- ४.६ सानुभाइ शर्माका कथामा प्रयुक्त भाषाशैली
 - ४.६.१ उखान तुक्काको प्रयोग
 - ४.६.२ झर्ना एवम् अनुकरणात्मक शब्द
 - ४.६.३ संस्कृति विषयक व्यङ्ग्य
 - ४.६.४ साहित्यिक उपनाम धारीप्रति व्यङ्ग्य
 - ४.६.५ शर्माका कथामा प्रयुक्त भाषा-शैली
- ४.७ शर्माका निबन्धमा प्रयुक्त भाषा-शैली
 - ४.७.१ उखान तुक्काको प्रयोग
 - ४.७.२ निबन्धमा हास्ययुक्त भाषाको प्रयोग
- ४.८ शर्माका नाटकमा प्रयुक्त भाषा-शैली
- ४.९ हास्यव्यङ्ग्यकारका रूपमा सानुभाइ शर्माको मूल्याङ्कन

पाँचौँ अध्याय उपसंहार र निष्कर्ष २२५-२३०

५.१ उपसंहार

५.२ निष्कर्ष

सन्दर्भ सूची

२३१-२३६

परिशिष्ट

परिशिष्ट १ जर्नलमा प्रकाशित शोध पत्र